Chapter - 8

अष्टम अध्याय

उप संहार

प्रेमाभ्यानक काव्य धारा की मूल्य वेतना लौकिक जीवन से समस्त
रही है। भैखिकालोन प्रेमाभ्यानक की बहमत का देखकर तथा भविष्य
में उनके और प्राप्त होने की सम्भावना को लेख करके, तथा इन वृत्तियों
में निरंतर लोक-वाताओं में उनकी अवस्थिति को देखकर यह परिलक्षित
होता है कि इस काल में आध्यात्मिक जीवन की वेतना के होते हुए भी
लोग प्रेम-वधानों का सुनना पढना पसंद करते थे। लोक-राजन के साधनों
में से इनके प्रचलन को निष्कर्ष हो समझा जा सकता है। इन आध्यात्मिक
काव्यों के सारसृच्यक अनुशीलन में सामान्य वर्ग के देशवास तथा हास-विलास
पूर्ण जीवन की झाकों का अपनी समस्तता के साथ अभिव्यक्त हुई है; साथ ही
अवेशामूल न्यूनतम वा क्यों न हो किंतु जन-जीवन का पक्ष भी अशुला
नहीं रहा है। इन काव्यों में व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त के
विचार तो मिलते हैं किंतु रचनाकार उसको विशेष अवधारणा-विस्मय से लेकर
गृहावस्था तक हो केन्द्रित रही है। अतः ये आध्यात्मिक
काव्य जीवन के एक सीमित फलक को ही विश्वस्तता के साथ प्रस्तुत करने
में समर्थ हुए हैं।
इन रचनाओं की उलेखनीय विशेषता जीवन के निस्प्रण को है जिससे मूलभूत जीवन दृष्टि प्रकाश में आती है। इनमें व्यक्ति के जीवन कुम, उसकी दिनचर्या, खान-पान, वस्त्र-परिधान, शेष-विन्यास तथा मनोविचार के विश्वास विवरण के आधार पर सामन्त वर्ग के वेभ्या-विलास का विश्वास आकलन भवी-भावित हो जाता है। अतः विवेचन से प्राप्त तथ्यों का सार्वभौमिक इतिहास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। योजन के उद्देश्य प्रवाह के बीच सच-अभासित की समकालीन अभिस्थिति, समय-वर्ग पर सत्त पड़ने वाले संस्कार, सम्पूर्ण जीवन में उसी की सार-स्वस्त मानकर हास-विलास में परिपूर्ण निर्माण वर्ग-विशेष की जीवन-दिशा को आलोकित करते हैं। इतिहास इत्यादि में भी इसके विवरण हमें प्राप्त होते हैं किन्तु इन वृत्तियों में इनके सूक्ष्म निरोधक से प्राप्त जो जीवन-दृष्टि अनुशासन से प्रकाश में अवलोकन किया है वे एक प्रकाश से पूरा परिचय ही खोज कर देते हैं। एक अन्य तथ्य यह है कि दिव्य रूप से विवाहपीय है कि एक तत्त्वाकार या अधिकारी: दरबार में रहने वाले सरकारी सेवा में सूक्ष्म व्यक्ति की नींव विवरण पर आधारित है। तात्त्विक है कि ऐसे विवरण एक पश्चिमी भी ही सकते हैं। ग्रन्थियाँ नामक काव्यकार कुम तो दरबारों से सम्भव अवश्य थे किन्तु अधिकारी: उनके संधित के पूर्णत्या पलने वाले व्यक्ति न थे। अतः इनका विलोकन प्रायः पूर्वांग्रह से अथवा सरकारी फरमासी से मुक्त कहा जा सकता है। उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में पत्रिद्विश्यक तथ्य जहाँ विश्वास, विस्तुल तथा सूक्ष्म निरोधक के परिचय हैं, वहाँ अपेक्षाकृत अधिक विश्वसनीयता के भी घोरता है।

10. विस्तृत विवेचन के लिए द्रष्टव्य – डॉ स्मीथ गोपाल गुप्त – महाकालीन शिन्दे काव्य में भारतीय संस्कृति, प्राकाशम, पृ 9-10.
इन काव्यों को विष्णु-स्तुति के काव्य-व्यापारों से समबद्ध होने के कारण कवियों को सच तज्जन्य परिपरिपर्वतियाँ' पद्म उनके ध्वान-प्रतिपादकों में हो अधिक रमी हुई इसलिए वे जन-जीवन को आर्थिक दशा को सफलता पूर्वक अधिक योग्य करने में असमर्थ रहे हैं। सामाजिक जीवन का भी अपूर्ण आकलन इन रचनाओं में है। परन्तु कोठ्रित्रिहीन भावना, समाज में पारी का स्थान, जनमोचन, और विवाह-संस्कार, रीति-नीति तथा लोकावली के तद्दृष्टि विवरण इनमें प्रचुरता के साथ सम्बंधित हुए हैं। लोक-विश्वासों तथा पर्यावरणों के निर्देश भी जन-जीवन के विवरण पक्षों का निर्देशन करने में एक सीमा तक समर्थ हैं। इन काव्यों में अप्रिय सामाजिक प्रश्नों, जीवन की विकृतियें' पद्म समाज-व्यवस्था के विवरण तथा विशेष विवरण सार्थक सत्य से भी प्रभावित है। इस काल-क्रांति में भारतीयका के अनेक साहित्यक के विवरण 'व्यवस्था' से सम्बंधित सामाजिक वर्ग जातियों के रूप में विकसित हो गए हैं। इन वर्गों का भी विवरण इन काव्यों में मिलता है। इस काल की पवित्रता जातियों तथा उनके स्वभाव, आवाज, व्यवहार पर भी समय सुधार पड़ो है, यो काल स्थल पर जन-जीवन को दयनीय दशा के भी विवरण बढ़के स्वाभाव के प्रकाश में आये हैं किन्तु, स्वाभाविक प्रतिपादण तथा वस्त्रित्वियति के निर्देश जो इतर काव्य धाराओं के माध्यम से प्रकाश में लाये जा चुके हैं, उनकी तुलना में इन काव्यों में उनका एक प्रकाश इस अभाव हो जाती है। इसे अधिकतम सामग्री की सीमा के रूप में निशंकित स्वीकार किया जा सकता है।
इनके रचनाकार युग को सांस्कृतिक पुनर्स्थापन को चेतना को बहुत कम स्पर्श कर सके हैं। यह उल्लेखनीय है कि अपने समय के कुछ समयान्तर तथा न्याय प्रवाह के न्यूनतमिक परिचय इन रचनाओं में मिल जाता है साथ ही धार्मिक मान्यताओं और लोक विश्वासों के कृत्यकुल तथ्य हमें मिलते हैं। इनकी विश्व वस्तु और उदासौर के परिप्रेक्ष्य में एकिष्कित विवरण का अल्म मात्रा में मिलना स्वर्ण सिद्ध है। इनमें यत्व-जग धार्मिक जगत के योगी अथवा सम्माननीय व्यक्तित्व नायक और नायिका के कार्य स्वायत्त भावें में सहायक दिखाये गये हैं। ऐसी ही घटनाएँ कथा वस्तु को रचनाकारों के द्वारा मनोकूल मोड़ देने में सहायक हुई है। ये व्याख्यान में रोचक अवसर बनाते हैं परन्तु धार्मिक जीवन का विस्तार चित्र उपस्थित नहीं कर पाते। यह कहा जा सकता है कि रचनाकार इसके लिए प्रतिवेदन नहीं थे किन्तु ऐसे उल्लेख यथा यत्न घटना प्रवाह सम्पादन जन-जीवन में ऐसे व्यक्तित्वों के प्रति सम्मान और श्रद्धा के तथ्य को प्रकाश में लाते हैं। भक्ति की इतर कार्य धाराओं में जिनका भक्त लोकार्थ से निकट का सम्बन्ध है, धार्मिक जीवन के अनेकधार, विस्तृत और विविध चित्र मिलते हैं।

प्रेमान्यानों को अधिकार कथाएँ राजकुमारों को हैं। स्वभावतः राज धरानों को कथा होने के कारण राजनीतिक भावना के लिए पर्याप्त अवसर उन्हें मिल सकता था। दूसरी ओर चूंकि ये अध्यात्मिक प्रेम कथाएँ हैं इसलिए राजनीतिक जीवन के अनेक पक्ष उपेक्षित भी हो सकते हैं। ये दोनों ही पर-स्पर विरोधी प्रस्तुतियाँ। इन कृतियों में अलग-अलग प्रवाह से मिलते हैं।

तृतीय उल्लेखनीय बात यह है कि जीवन का कार्य-व्यापार तेजस्वित जीवन चेतना तक ही संयोजित हुआ है। अतः किसी प्रेमान्यानक के विवरण विस्तृत है।
तो किसी में उनका बिलकुल अभाव है। रचनाओं में प्राप्त बन्ता साध्य से यह प्रमाणित है कि अपवाद स्थिर एकाध कच्ची ही राजाश्रय में रहा चित्तु अनेक कच्ची न किसी समृत्त ती से सम्बन्धित है। राजनीतिक जीवन पक्ष के नाकल को उनको सीमाओं को पत्थरित्व अनुशीलन में देखा जा सकता है। लेकिन का अपना मन्त्रवाद है कि ये अधिक चित्र भी कुछ महत्त्वपूर्ण जीवन पक्ष का प्रकाश में लाते है।

मध्य युग की कला-साधना में संगीत और स्थापत्य को प्रमुखता रही है। मुस्लिम शासकों के समय में मूर्तिकला उन्नत दशा में नहीं रही थी। इस वाणिज्य काव्यों में, यह कला के निर्देश भी अत्यन्त है। मुस्लिम दरबारों में केवल भाषाओं के नृत्य कागजात को जाने के कारण जन-साधारण में इसे बहुत दर्शनीय से देखा जाता रहा था। इन काव्यों में राज दरबारों के नृत्य की ही प्रमुखता रही है। चित्र कला का उद्देश्य यों तो कला साधना ही था। किन्तु इन रचनाओं में इसका उपयोग तत्कालीन सामान्य वर्ग की विलास सेवा को उत्तेजित करने के लिए किया गया है। चित्र सारियों में चित्रित किये गये रंग चित्र और चित्रित आवश्यक के चित्रों में यह बात प्रमाणित है। पत्थरित्व अन्य निर्देश एक सीमा तक ही मिलते हैं। जिसका कारण अधिकांश रचनाओं की धारा चित्रों का विकास चल-प्रतिशतें में होना रहा है। इस प्रकार लिखित कलाओं के अंक की दृष्टि से संगीत को छोड़ कर अन्य कलाओं के चित्र इनमें सबसे ज्यादा पूर्ण नहीं है।

इन काव्यों में कुछ ऐसी कथाएँ भी हैं जिन पर आधारित रचनाओं की एक समूह परम्परा भी दृष्टि गोचर होती है और कि माध्यानाल काम-
कंदला, पतिम्नी कथा, उषा ब्रम्हस्त्र की कथा इत्यादि। प्रतीत होता है कि इस तरह की कथा वस्तु सुग्ने वेदना को अत्यधिक प्रभावित करती रही होगी अथवा ये रचनाएँ लोगों के सृजन में पर भी गहरा असर करती थीं। इन कथाओं की विशेषता यह है कि सम्पन्न वर्ग और राजमहलों के बीच वैभव-विलास के सराहों व वातावरण में उप-सौन्दर्य का आकर्षण प्रेम के कार्य व्याप्तार्थ को नियोजित करता है। यह यौन सुग्न प्रसूतियों के उन्मुक्त प्रवाह का धोतर है। लेखकों ने इसे स्वच्छन्द प्रेम माना है। साहित्य हे वर्ग विशेष में ऐसी कथाओं की विशेष या अत्यधिक माग रही हो। 'संस्तर', 'सपातीर' वातिल प्रेमावधानों को नायिकाओं को भी मे-कथाएँ सुनाई जाती रहीं। इससे इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि ये कथाएँ उनकी जीवन प्रसूतियों के अधिक अनुकूल थीं। यह अनुस्मरण है कि उनके कथाकों में यौन सुग्न स्वास्थ्य के उत्तेजक चित्र प्राप्त होते हैं। संभवतः वैभव विलास में पूर्वजया निमंत्रण सामी वर्गीय नायक-नायिकाओं की विलास सृंगाराः को ऐसी कथाओं के सुनने-सुनाने और उनमें तल्लों रहने में मानसिक परिवर्तन या परिस्थित प्राप्ति का अनुभव होता है। इसलिए को ध्यान में रख कर इन कथाओं के रचनाकारों और उनके लोगों या पाठकों के विषय में एक सम्भव और शोधकृत अध्ययन किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन में ऐसी मनोवैज्ञानिक वैदिक के बोध में सक्तिय यज-तन्त्र यिद्यें गयें है और लेखक ने स्वयं को विषय परिवहित में ही रखने का प्रयास किया है उसे विकास है कि सुधी अध्येता अध्यय इस युग की एक व्यापक भूमिका को प्रदान में लाएँ।

सम्प्रत्या मूल्यांकन के बाद निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि भक्तिकाल के साँस्कृतिक जीवन के अध्ययन में ये कृतियाँ अपनी सीमाओं में रह कर अत्यधिक
सहायक और महत्वपूर्ण हो सकती है। प्रत्येक अनुशीलन अपनी सीमाओं से आबाद रहता है। साधन, प्रयास, सामर्थ्य को सीमाएं तथा वूलनाओं का विभारण सभी अथवायों को प्रभावित करता है। विषयक आदि काल और मंदिर के सांस्कृतिक की नयी नयी सामग्री कम से कम निगमित प्रचार वचनों से बाराम्ब दृष्टि में आती और परीक्षित-विश्लेषित होती रही है, जिसके परिणामस्वरूप नये-नये अनेक अथवाय संयोजित हुए हैं। परंतु अथवाय पूर्वकालिक उपलब्धियों में नये तथ्य जोड़कर तथा नवीन दृष्टि से विश्लेषण-परीक्षण करके नयी व्यवस्थाओं प्रस्तुत करते आये हैं। इस अथवाय परम्परा के सहारे लेख 93 प्रेमाध्यायक काव्यों की लूकनाओं को प्राप्त कर सका और उनमें से 64 का ही उपयोग कर पाया। इन काव्यों में संबंधित आर्यज्ञान विलेख नहीं दिने-दिनी रचनाओं पर ही आधारित है। अतः लेख कृतियों की अवधारता को संबंध-सीमा के केवल 93 या उससे दस-पांच अधिक मात्र ही नहीं मानता। यह सहज ही विश्वास किया जा सकता है कि आगे मिलने वाली वूलनाओं के प्रकाश में और भी महत्वपूर्ण कृतियाँ अथवायों के अनु-शीलनों की आधार बनेंगे और साथ ही इस संक्षेप से बहुत अधिक संख्या वाली सामग्री प्रकाश में आये। ऐसी स्थिति में प्रेमाध्यायक काव्य धारा का काव्य-गत अथवाय तो आज की अथवाय सीमा का विस्तार कर सकता है। सांस्कृतिक अथवाय के विषय में इस सम्भावना को निश्चय ही स्वीकार किया जा सकता है। लेख की अपनी निजी आस्था प्रस्तुत अथवाय पक्षों के अधिक विस्तार और ड्रम और समाज का संबंध में है। विश्वास है कि इस सम्भावना से कुछ पाठक सहमत होंगे कि भविष्य में इस काव्य धारा की ओर भी कृतियों के प्रकाश में आने पर ऐसे महत्वपूर्ण तथ्य उद्घाटित हो जिनसे यह निश्चित होता कृपया यह जांच करें।